प्रवाह
निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

मानव अस्तित्व के सामाजिक जंगल में, पहचान के बिना जीने की कोई भावना नहीं है ...
- एरिक एरिकसन

अमेरिकी मनोवैज्ञानिक

पेंशन के मामले में ईपीएफओ की याचिका खारिज करते हुए केरल उच्च न्यायालय के फैसले को बरकरार रखने का सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय निजी क्षेत्र के उन कर्मचारियों के लिए राहत की तरह है, जो सेवानिवृत्ति के बाद वित्तीय सुरक्षा चाहते हैं।

बढ़ी पेंशन का तोहफा

सर्वोच्च

न्यायालय ने कर्मचारियों को उनके पूरे वेतन के हिसाब से पेंशन देने के केरल उच्च न्यायालय के फैसले को बरकरार रखते हुए ईपीएफओ यानी कर्मचारी भविष्य निधि संगठन की याचिका जिस तरह खारिज की है, वह संगठित क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए बड़ी राहत है। ईपीएस के तहत बढ़ी हुई पेंशन देने के पक्ष में शीर्ष अदालत पहले भी फैसला दे चुकी है। 2016 में उसने सार्वजनिक क्षेत्र के कुछ सेवानिवृत्त कर्मचारियों की याचिका पर सुनवाई करते हुए ईपीएफओ को भविष्य निधि से बढ़ा हुआ अंशदान काटने और उसके मुताबिक अधिक पेंशन देने का आदेश दिया था। निजी क्षेत्र में अधिक पेंशन पाने का मार्ग उसी फैसले से खुल गया था। संगठित क्षेत्र में काम करने वालों को पेंशन देने के लिए सरकार ने 1995 में एंप्लॉइज पेंशन स्कीम (ईपीएस) शुरू की थी, जिसमें पहले कर्मचारी के वेतन के 6,500 रुपये का 8.33 प्रतिशत डाला जाता था। 2014 में यह सीमा बढ़ाकर 15,000 रुपये कर दी गई। पर इसमें शर्त यह लगा दी गई कि जो पूरे वेतन के आधार पर पेंशन चाहते हैं, उनकी पेंशन की गणना आखिरी पांच साल के औसत मासिक वेतन पर होगी। जबकि पहले आखिरी वेतन के आधार पर पेंशन की गणना होती थी। इससे पहले 1996 में भी ईपीएफओ ने उस संशोधित प्रावधान को लागू ही नहीं किया था, जिसमें व्यवस्था थी कि कोई कर्मचारी अगर अधिक पेंशन पाने के लिए 8.33 फीसदी से अधिक योगदान करना चाहता है, तो उसे स्वीकारा जाए। जाहिर है कि ईपीएफओ ने कर्मचारियों को अधिक पेंशन मिलने की राह में एकाधिक बार रोड़े अटकाए, जबकि निजी क्षेत्र के कर्मचारियों के लिए पीएफ की एकमुश्त बड़ी रकम की तुलना में ठीकठाक पेंशन बेहतर विकल्प है। इसी कारण हाल के वर्षों में कर्मचारियों को ईपीएफओ के खिलाफ अदालत में जाना पड़ा, क्योंकि ईपीएस के तहत मिलने वाली पेंशन बहुत ही कम है। हालांकि इसके बाद भी कर्मचारियों को बढ़ी हुई पेंशन तो उसके बढ़े हुए अंशदान के आधार पर ही मिलेगी। ईपीएफओ ने इसी साल पेंशन अंशदान बढ़ाने के इच्छुक कर्मचारियों के आवेदन स्वीकार करने का आदेश जारी किया और फिर उसे वापस ले लिया था। उम्मीद करनी चाहिए कि अदालत के फैसले के बाद कर्मचारियों के सामने पेंशन के लिए अधिक अंशदान करने का विकल्प मिलेगा, ताकि सेवानिवृत्ति के बाद वे सुरक्षित जीवन जी सकें।

पहचान और विकास के बीच पूर्वोत्तर

भारतीय जनता पार्टी ने दावा किया है कि राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (एनडीए) 2019 के संसदीय चुनाव में पूर्वोत्तर में बहुत बेहतर प्रदर्शन करेगा। पार्टी अध्यक्ष अमित शाह ने कहा कि उन्हें इस क्षेत्र की 25 लोकसभा सीटों में से 18-19 सीटों की उम्मीद है। हेमंत विस्व सरमा जैसे पार्टी के कुछ स्थानीय नेता तो 20-21 सीटों पर एनडीए की जीत की भविष्यवाणी कर रहे हैं। वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में एनडीए ने इस क्षेत्र में 11 सीटें जीती थीं, जिनमें भाजपा ने अकेले आठ सीटें जीती थीं-असम में सात और अरुणाचल प्रदेश में एक।

तब से बहुत कुछ बदल गया है। भाजपा ने क्षेत्रीय दलों के साथ मिलकर इस क्षेत्र के सभी राज्यों में सरकारें बनाईं, लेकिन मणिपुर और त्रिपुरा में इसका शानदार प्रदर्शन अप्रत्याशित था, क्योंकि इसने गठबंधन में वरिष्ठ भागीदार की तरह जीत दर्ज की। इसके मद्देनजर भाजपा की स्थिति बेहतर होनी चाहिए।

नॉर्थ ईस्ट नाउ द्वारा कराए गए एक ओपिनियन पोल में मतदाताओं ने पूर्वोत्तर में अवैध प्रवासन को अपनी शीर्ष चिंता बताया, उसके बाद विकास का मुद्दा है। पिछले महीने हुए इस ऑनलाइन पोल ने दिखाया कि 44.8 फीसदी मतदाता मानते हैं कि पूर्वोत्तर में अवैध प्रवासन मुख्य चुनावी मुद्दा होना चाहिए, जबकि 34.67 फीसदी मतदाताओं का मानना है कि लोकसभा चुनाव में विकास को शीर्ष प्राथमिकता मिलनी चाहिए।

ब्रिटिश शासन के दौरान शुरू हुआ अवैध प्रवासन का मुद्दा पूर्वोत्तर में अब तक अनसुलझा रहा है। असम गण परिषद (अगप) और भाजपा सहित विभिन्न राजनीतिक दल लंबे समय से जारी इस मुद्दे को हल करने के वादे के साथ सत्ता में आए। अवैध प्रवासियों के मुद्दे पर भाजपा की आक्रामकता असम में राष्ट्रीय नागरिक रजिस्टर (एनआरसी) को अपडेट करके दृढ़ता से लागू करने से मेल खाती है, जिसे अवैध प्रवासियों को बाहर निकालने के कदम के रूप में पेश किया गया। अमित शाह ने पूर्वोत्तर के बाकी क्षेत्रों और पश्चिम बंगाल में भी शीघ्र एनआरसी को अपडेट करने का वादा किया, क्योंकि 2014 के चुनाव में नरेंद्र मोदी ने वादा किया था कि अगर वह सत्ता में आए, तो अवैध बांग्लादेशियों को बाहर निकाल देंगे।

पहचान की राजनीति पूर्वोत्तर में हमेशा से प्रचलित रही है, बाहरी और भीतरी व्यक्ति की भावना अंततः चुनाव परिणाम को प्रभावित कर सकती है।

सुबीर भौमिक, वरिष्ठ पत्रकार

लेकिन सत्ता में आने के बाद भाजपा एक विवादास्पद नागरिकता (संशोधन) विधेयक, 2016 ले आई, जिसमें हिंदू बांग्लादेशियों को नागरिकता देने की बात की गई। यह विधेयक लोकसभा में पारित हो गया, लेकिन मोदी सरकार द्वारा राज्यसभा में पारित न करवा पाने के कारण इसका अस्तित्व खत्म हो गया।

इस क्षेत्र में भाजपा के हिंदुत्व के मुद्दे से सकारात्मक संदेश नहीं गया है, बल्कि नागरिकता संशोधन विधेयक को पूर्वोत्तर के स्थानीय समुदाय और उनका प्रतिनिधित्व करने वाली स्थानीय पार्टियां इसे एक बड़े विश्वासघात की तरह देखती हैं।

असम में बड़ी संख्या में बंगाली मूल के लोग रहते हैं, एनआरसी और नागरिकता संशोधन विधेयक का प्रभाव पड़ना ही था, सो इस कवायद के बीच असम गण परिषद (अगप) एनडीए से बाहर हो गई थी। इस क्षेत्र में भाजपा के अन्य सहयोगियों ने भी ऐसी ही धमकी दी थी, जिससे भाजपा प्रायोजित पूर्वोत्तर जनतांत्रिक गठबंधन (एनईडीए) के टूटने की आशंका बढ़ गई। मगर राज्यसभा में नागरिकता संशोधन विधेयक को पारित करवाने में भाजपा के विफल रहने के बाद पूर्वोत्तर के स्वदेशी समुदायों ने राहत की सांस ली। अगप फिर से एनडीए और एनईडीए में शामिल हो गया, लेकिन ऑल असम स्टुडेंट यूनियन (आसू) एवं कृषक मुक्ति संग्राम समिति ने उसकी भारी आलोचना की।

भाजपा ने यह भी कहा है कि अगर वह सत्ता में लौटती है, तो नागरिकता संशोधन विधेयक को फिर से पारित कराने की कोशिश करेगी। यही वह जगह है, जहां झूठ पकड़ में आता है- स्वदेशी समुदाय सतर्क हैं, क्योंकि वे बांग्लादेश से आए हिंदुओं और मुसलमानों में अंतर नहीं करना चाहते, और दोनों को घुसपैठिया मानते हैं। इसलिए नागरिकता संशोधन विधेयक को फिर से लाने के भाजपा के वादे से उसे असम, मेघालय और त्रिपुरा (जहां भी बंगाली हिंदू बहुमत में हैं) में बंगाली हिंदुओं का वोट मिल सकता है, लेकिन इससे स्वदेशी समुदाय और मुसलमान असहज हो गए हैं, जो कि धर्म आधारित नागरिकता की व्यवस्था का विरोध करते हैं।

भाजपा ने असम के छह स्वदेशी समुदायों को अनुसूचित जनजाति का दर्जा देने का प्रस्ताव दिया है, ताकि उनका दिल जीत सके। इसे केंद्रीय वित्तपोषण में विशेष लाभ के साथ असम को एक आदिवासी बहुल राज्य बनाने के कदम के रूप में देखा गया है और इस बात की गारंटी के रूप में भी कि राजनीतिक ताकत हमेशा स्वदेशी समुदायों के पास रहेगी। लेकिन असम के कई लोग इसे अपनी सामूहिक उप-राष्ट्रीय पहचान को विखंडित करने वाले कदम के रूप में देखते हैं और इससे परेशान हैं।

यह सोशल इंजीनियरिंग वोट के रूप में कैसे तब्दील होगी? उस ऑनलाइन पोल से पता चलता है कि 20.52 फीसदी मतदाता मानते हैं कि रोजगार सृजन इस क्षेत्र में मुख्य चुनावी मुद्दा होना चाहिए। इसका असर भाजपा के खिलाफ होगा, क्योंकि देश के अन्य हिस्सों की तरह इस क्षेत्र में भी खासकर नोटबंदी के बाद रोजगार का भारी नुकसान हुआ है। लेकिन पहचान की राजनीति पूर्वोत्तर में हमेशा से प्रचलित रही है, बाहरी और भीतरी व्यक्ति की भावना अंततः चुनाव परिणाम को प्रभावित कर सकती है।

हालांकि इस सवाल का जवाब देना कठिन है कि एनआरसी अपडेट करने से भाजपा को होने वाला लाभ बरकार रहेगा या नहीं, क्योंकि नागरिकता संशोधन विधेयक पर पूर्वोत्तर क्षेत्र में भारी आक्रोश देखा गया। इस विधेयक ने पूर्वोत्तर क्षेत्र में चुनाव परिणामों को जटिल बना दिया है, क्योंकि यह जहां त्रिपुरा और असम जैसे कुछ क्षेत्रों में निश्चित रूप भाजपा को फायदा पहुंचाएगा, वहीं इससे असम के कुछ हिस्सों और पूर्वोत्तर के अन्य क्षेत्रों में उसे नुकसान भी हो सकता है।

अंतर्ध्वनि

>> निर्मल वर्मा

कला संयोग को अनिवार्य में बदलने की कोशिश है

जब हम जवान होते हैं, हम समय के खिलाफ भागते हैं, लेकिन ज्यों-ज्यों बूढ़े होते जाते हैं, हम ठहर जाते हैं, समय भी ठहर जाता है, सिर्फ मृत्यु भागती है, हमारी तरफ। साहित्य हमें पानी नहीं देता, वह सिर्फ हमें अपनी प्यास का बोध कराता है। जब तुम स्वप्न में पानी पीते हो, तो जागने पर सहसा एहसास होता है कि तुम सचमुच कितने प्यासे थे। हमें उन चीजों के बारे में लिखने से अपने को रोकना चाहिए, जो हमें बहुत उद्वेलित करती हैं, जैसे—बादलों में बहता हुआ चांद, हवा की रात और हवा, अंधेरे में झूमते हुए पेड़, पहाड़ों पर चांदनी का आलोक, स्वयं पहाड़ और उनकी निस्तब्धता—इन सबको अभिव्यक्त करना जरूरी नहीं है, न ही इन्हें नाम देने की कोशिश करनी चाहिए, क्योंकि वे अपनी भावमुद्रा में बहुत रहस्यमय और 'इल्यूसिव' हैं। हम अपने को सिर्फ अपनी संभावनाओं की कसौटी पर नाप सकते हैं। जिसने अपनी संभावनाओं को आखिरी बूंद तक निचोड़ लिया हो, उसे मृत्यु के क्षण की कोई चिंता नहीं करनी चाहिए। आदमी को पूरी निर्ममता से अपने अतीत में किए कार्यों की चीर-फाड़ करनी चाहिए, ताकि वह इतना साहस जुटा सके कि हर दिन थोड़ा-सा जी सके। एक लेखक आत्म से शुरू करके शून्य की ओर जा सकता है, किंतु जो अपने को शून्य से शुरू करता है, उसे 'आत्म' तक पहुंचने के लिए अपनी समूची संस्कृति को बदलना होगा—वरना वह सिर्फ प्रयोगशील लेखक बनकर रह जाएगा। जिन्हें हम अपने जीवन के 'सृजनात्मक क्षण' कहते हैं, वे घोर कृतघ्नता के क्षण हैं। वे चाहे प्रेम के हों या लेखन के। यह भयानक है, जब लेखक लिखना बंद कर देता है। उसके पास दुनिया को दिखाने के लिए कुछ भी नहीं रहता, सिवा अपने चेहरे के! कला संयोग को अनिवार्य में बदलने की कोशिश है।

-हिंदी के दिवंगत साहित्यकार और चिंतक

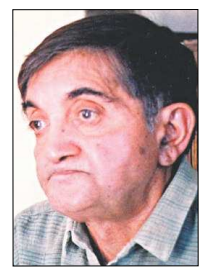

मंजिलें और भी हैं

>> संजीव कुमार

अपनों ने रिश्ता तोड़ा, पर छुआछूत से लड़ाई जारी है

मैं बिहार के खगड़िया जिले के परबत्ता गांव का रहने वाला हूं। उच्च शिक्षा के लिए मैं दिल्ली चला आया, जहां से मैंने एमबीए की डिग्री ली, उसके बाद मॉडलिंग करने लगा। मेरा ज्यादातर समय दिल्ली में ही गुजरा। लेकिन लंबे समय बाद एक गांव में जाने पर मैं गांव की हकीकत से रूबरू हुआ, तो स्तब्ध रह गया।

वर्ष 2005 की बात है। मेरी दीदी की सास का देहांत हो गया था, इसलिए हम सबको उनके अंतिम संस्कार के लिए उनके गांव जाना पड़ा था। श्राद्ध समारोह में जब लोगों को खिलाने का काम चल रहा था, तब अचानक मुझे मालूम हुआ कि दो पत्तलों पर बचे अवशिष्टों के लिए दो कुत्ते लड़ रहे हैं, जबकि पास के ही गांव के कुछ लोग भी पत्तलों में बची जूठन बटोरने की कोशिश में हैं। मैं यह सुनकर सन्न रह गया। वहां जाकर मैंने देखा, तो मुझे बेहद हैरानी हुई कि सिर्फ दो लोग नहीं, कई महिलाएं और बच्चे भी जूठन बटोरने के लिए दूर खड़े थे। मैंने अपने रिश्तेदारों से कहा कि आपने लोगों को खिलाने के लिए जब एक लाख से भी अधिक रुपये खर्च किए हैं, तो फिर कुछ लोग पत्तलों से जूठन बटोरने के लिए क्यों आए हैं? इन गरीबों को भी बिठाकर भोजन कराइए। इस पर मेरे रिश्तेदार बेहद नाराज हुए। उन्होंने कहा, ये समाज के बेहद निचले हिस्से से आते हैं और भोज में जूठन बटोरना इनका काम ही है। अगर इन्हें पंगत में बिठाकर भोजन कराया गया, तो पूरा समाज हमारा बहिष्कार कर देगा। उन्होंने मुझे डांटते हुए कहा कि चूंकि आप बाहर रहते हैं, इसलिए हमारे समाज की सच्चाइयों के बारे में नहीं जानते।

ऊंची जाति के लोग अक्सर मेरे साथ दुर्व्यवहार करते रहे, लेकिन मैं अपने मिशन में लगा रहा।

मैंने उन्हें कुछ कहा तो नहीं, पर मन ही मन सोच लिया कि जाति प्रथा की इस बुराई को खत्म करने के लिए मुझसे जो कुछ भी हो सकेगा, मैं जरूर करूंगा। छह महीने बाद मैं दोबारा दीदी की ससुराल में गया और दलित समुदाय के लोगों से मिलने-जुलने लगा। मैंने देखा कि वे सूप और बांस की दूसरी चीजें बनाते हैं और सूअर पालते हैं। मैं उन दलित परिवारों से रोज मिलने-जुलने लगा। एक दिन बीडीओ ने मुझे बुलाकर मेरे काम की तारीफ की। मैंने उन्हें अपनी योजना के बारे में बताया, तो उन्होंने मुझे दो कमरों का एक घर बनाकर दिया। मैं वहां उन दलित परिवारों के पच्चीस बच्चों को बुलाता। मैं वहां उन्हें साफ-सफाई के बारे में बताने के साथ उन्हें पढ़ाने भी लगा। अब सवर्ण समाज की ओर से मुझ पर हमले होने लगे। मुझे नक्सली से लेकर हत्यारा तक बताया गया। दीदी के ससुराल वालों ने मुझे घर से निकाल दिया। इन सबसे बेपरवाह होकर मैंने बहिष्कृत हितकारी संगठन (बीएचएस) नाम से एक संस्था बनाई। अब उस गांव के और आसपास के समृद्ध लोग मेरे परिवार पर समाज से बहिष्कृत करने का दबाव बनाने लगे। ऐसा कोई दिन नहीं गुजरता, जब ऊंची जाति के लोग मुझे गाली न देते। लेकिन मैं अपने मिशन में लगा रहा। धीरे-धीरे चालीस गांवों के दलित समाज के लोग इस संगठन से जुड़े। ऊंची जाति के कुछ लोग मेरे काम की तारीफ भी कर रहे थे। फिर मैंने एक दिन गंगा नदी तक एक पदयात्रा आयोजित की, क्योंकि इन्हें गंगा को छूने की अनुमति नहीं थी। डीएम ने भी मेरे काम की सराहना की। छुआछूत खत्म करने का मेरा अभियान अब भी जारी है, हालांकि इससे मेरा व्यक्तिगत नुकसान बहुत हुआ है। मेरे परिवार के लोगों ने मुझसे रिश्ता तोड़ लिया है, नौ साल पहले पत्नी भी मुझे छोड़कर चली गई। लेकिन मेरा काम रुकने वाला नहीं है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

फिल्मी सितारों का चुनावी सफर

लोग चाहते हैं कि जिन्हें उन्होंने चुना है, वे उनकी समस्याओं का हल करें। कलाकारों को जानना चाहिए कि जनता की उनसे अपेक्षाएं होती हैं। दलों को भी सोचना चाहिए कि वे मात्र इनकी प्रसिद्धि के कारण चुनाव के मौके पर इन्हें पार्टी में शामिल क्यों करते हैं।

पहले कांग्रेस में कथित रूप से शामिल हुई सपना चौधरी के भाजपा में शामिल होने की अटकलें तेज हैं। इससे पहले उन्होंने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा था कि वह कलाकार हैं, उन्हें राजनीति से कुछ लेना-देना नहीं। दरअसल कलाकार राजनीति को भी अभिनय समझते हैं। अरसे से राजनीति में अभिनेता, अभिनेत्रियों, खिलाड़ियों को शामिल किया जाता है। चूंकि जनता में इनकी बहुत लोकप्रियता होती है, इसलिए अधिकांश दल इन्हें अपने पाले में खींचने की कोशिश करते हैं। कांग्रेस ने कोशिश की थी कि वह सपना चौधरी को हेमा मालिनी के खिलाफ चुनाव लड़ाए। बाद में टिकट किसी और को दे दिया गया। हेमा मालिनी जब अपना नामांकन भरने आईं और उनसे पूछा गया कि उन्होंने मथुरा की जनता के लिए क्या किया है, तो उन्होंने जवाब दिया कि काम तो बहुत किए हैं। मगर कौन-कौन से काम किए हैं, यह याद नहीं। हेमा ने मथुरा-वृंदावन में बंदरों के आतंक को देखते हुए बंदर अभयारण्य बनाने की बात कही थी, वह बना, ऐसी कोई खबर नहीं आई।

आपातकाल के बाद शत्रुघ्न सिन्हा, देव आनंद , विजय आनंद आदि ने जनता पार्टी के लिए काम किया था। उसके बाद अक्सर कई मशहूर अभिनेता, अभिनेत्रियां चुनाव लड़ते रहे हैं। कहते हैं कि राजेश खन्ना जब नई दिल्ली से चुनाव लड़ रहे थे, तब उन्हीं के कारण लालकृष्ण आडवाणी ने गुजरात के गांधीनगर से चुनाव लड़ा था। शत्रुघ्न सिन्हा लंबे समय तक भाजपा के सांसद रहे और अब कांग्रेस से चुनाव लड़ने की तैयारी कर रहे हैं। सुनील दत्त मुंबई उत्तर-पश्चिम क्षेत्र से कांग्रेस के सांसद थे। विनोद खन्ना पंजाब के गुरदासपुर से भाजपा के सांसद थे। अभिनेता धर्मेंद्र को भाजपा ने बीकानेर से चुनाव लड़वाया था, पर चार साल बाद इलाके में उनके गायब होने के पोस्टर नजर आए! राज बब्बर पहले सपा में थे, अब कांग्रेस में हैं और फतेहपुर सीकरी से चुनाव लड़ रहे हैं।

क्षमा शर्मा

गोविंदा भी मुंबई से कांग्रेस की टिकट पर चुनाव लड़कर सांसद बन चुके हैं। राजीव गांधी के परम मित्र अमिताभ बच्चन जब इलाहाबाद से चुनाव लड़े थे, तब उन्होंने हेमवती नंदन बहुगुणा जैसे बड़े नेता को पराजित किया था। पर बाद में अमिताभ ने कहा कि वह राजनीति के लिए नहीं बने हैं। शबाना आजमी, रेखा और जया भी राज्यसभा में रह चुकी हैं या हैं। नगमा और खुशबू तो कांग्रेस की प्रवक्ता भी हैं। कई बार लोग इनके खिलाफ अपशब्द भी बोलते हैं। महिलाओं के लिए तो बेहद अपमानजनक शब्दों का प्रयोग किया जाता है।

उत्तर भारत में इन अभिनेता-अभिनेत्रियों को देखने, उनसे मिलने आदि के कारण लोग एक बार भले उन्हें चुनाव में जिता दें, पर दूसरी पारी इनके लिए हमेशा मुश्किल होती है। सिर्फ मशहूर होने से ही चुनाव क्षेत्र के लोगों का काम नहीं चलता। वे चाहते हैं कि जिसे उन्होंने अपना प्रतिनिधि चुना है, वे उनकी समस्याओं का हल करें। उनसे मिले-जुलें। पर इनमें से अधिकांश मुंबई में रहते हैं। अब अभिनय करें कि चौबीस घंटे की राजनीति संभालें। इन्हें जानना चाहिए कि जो लोग आपको चुनाव जिताते हैं, उन्हें आपसे बड़ी अपेक्षाएं भी होती हैं। दलों को भी सोचना चाहिए कि वे मात्र इनकी प्रसिद्धि के कारण ऐन चुनाव के मौके पर इन्हें पार्टी में शामिल करने के लिए कतारबद्ध क्यों खड़े रहते हैं।

दक्षिण भारत में ऐसा नहीं है। वहां एम जी आर, करुणानिधि, जयललिता और एनटी रामाराव फिल्म कलाकार थे और मुख्यमंत्री भी बने, जिससे सियासत में उनकी भागीदारी सिर्फ नाम और चेहरे की रही। दक्षिण के इन लोगों से उत्तर भारत के लोग सीख तो सकते ही हैं।

खुली खिड़की

अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र के यात्री

इंटरनेशनल स्पेस स्टेशन पर अब तक 236 लोग पहुंचे हैं, जिनमें सबसे ज्यादा संख्या अमेरिकियों की है। दूसरा स्थान रूस और तीसरा स्थान जापान का है। भारत से एक भी व्यक्ति अंतरराष्ट्रीय अंतरिक्ष केंद्र पर नहीं गया है, लेकिन अमेरिका से वहां जाने वाली सुनीता विलियम्स भारतीय मूल की ही थीं।

आत्म ज्योति नहीं बुझती

अपने आध्यात्मिक ज्ञान के लिए प्रसिद्ध राजा जनक ने एक दिन ब्रह्मवेत्ता ऋषि याज्ञवल्क्य से पूछा, महर्षि, यदि इस संसार से सूर्य लुप्त हो जाए, तो मनुष्य किसकी ज्योति का सहारा लेकर जीवित रहेंगे? महर्षि ने सहज भाव से उत्तर दिया, सूर्य के न रहने पर चंद्रमा की ज्योति से मनुष्य का काम चल सकता है। महर्षि के उत्तर से जनक पूर्णतः संतुष्ट नहीं हुए।

सत्संग

उन्होंने फिर से सवाल पूछा, और अगर चंद्रमा भी लुप्त हो जाए तो? थोड़ी देर रुककर महर्षि ने उत्तर दिया, अगर चंद्रमा भी लुप्त हो जाए, तो अग्नि की ज्योति मनुष्य को रोशनी देने के लिए पर्याप्त है। लेकिन जनक तो जनक थे। उनकी जिज्ञासा का फिर भी समाधान नहीं हुआ।

उन्होंने मुस्कराते हुए महर्षि से पूछा, महर्षि मान लें कि अग्नि लुप्त हो चुकी है। ऐसे में मनुष्य को क्या बगैर रोशनी के ही रहना पड़ेगा? महर्षि याज्ञवल्क्य के पास इसका भी उत्तर था। उन्होंने कहा, नहीं राजन। आप तो जानते हैं कि वाक शक्ति को भी शास्त्रों में ज्योति कहा गया है। अग्नि के अभाव में मनुष्य उससे भी प्रकाश प्राप्त कर सकता है।

जनक ने पूछा, और अगर वाक शक्ति भी न हो, तो? याज्ञवल्क्य ने गंभीर होकर कहा, राजन, आत्म ज्योति ऐसी चीज है, जो कभी नहीं बुझती। जिसके पास आत्म ज्योति है, उसे कभी रोशनी की जरूरत नहीं पड़ती। अब जनक की जिज्ञासा का समाधान हो गया।

-संकलित

हरियाली और रास्ता

निशांत, बच्चा और पिल्ला

एक बच्चे की कहानी, जिसने अपनी तरह के एक कमजोर पिल्ले को अपना साथी चुना।

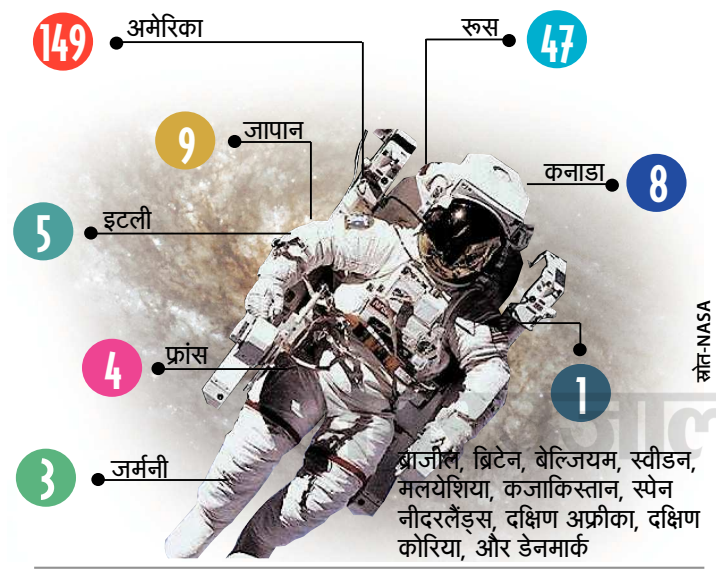

निशांत के घर में एक दिन कहीं से एक नन्ही-सी मादा गोल्डन रिट्रीवर आ गई। निशांत ने उसे बहुत भगाने की कोशिश की, पर वह जाती ही न थी। उसका नाम निशांत ने लिली रखा था। निशांत कड़क स्वभाव का था, पर लिली के साथ रहते-रहते वह संवेदनशील और शांत होता जा रहा था। कुछ ही साल में लिली ने पांच बच्चे दिए। निशांत ने उन बच्चों को बेचने के लिए कई लोगों से बात की, पर कहीं से कोई जवाब नहीं आया। उसने कुछ पोस्टर बनवाए और चौक-चौराहों पर चिपका दिए। उसने एक पिल्ले की कीमत पांच हजार रुपये रखी थी। एक दिन वह अपने घर के दरवाजे पर पोस्टर लगा रहा था कि पीछे से किसी ने उसकी कमीज खींची। निशांत ने देखा, वह एक छोटा बच्चा था। उसने कहा, अंकल, मुझे भी एक कुत्ता चाहिए। मेरा कोई दोस्त नहीं है। मैं उससे दोस्ती करूंगा और उसके साथ खेलूंगा। निशांत ने कहा, पर एक पिल्ला पांच हजार रुपये का है। आप के पास इतने पैसे हैं? जवाब में बच्चे ने निशांत को एक गुल्लक दी और कहा, इसमें जितने भी पैसे हैं, आप ले लो। निशांत ने मुस्कराते हुए आवाज लगाई, लिली। घर से लिली दौड़ती हुई आई। पीछे-पीछे पिल्ले भी आ रहे थे। निशांत बोला, तुम्हें जो भी पिल्ला चाहिए, चुन लो। बच्चे ने देखा, सबसे पीछे एक छोटा-सा पिल्ला लुढकते हुए आ रहा था। उसका एक पैर कमजोर था, इसलिए वह भाग नहीं पा रहा था। बच्चे ने निशांत से कहा, मुझे वह वाला चाहिए। निशांत बोला, पर उसका पैर थोड़ा कमजोर है। आप उसके साथ दौड़ भी नहीं पाओगे। वह बच्चा धीरे से झुका और अपनी पैंट को हाथ से ऊपर करने लगा। निशांत ने देखा, उसके दोनों पैरों में रॉड लगी थी। बच्चा बोला, अंकल मैं भी दौड़ नहीं पाता। हम दोनों एक दूसरे को समझ सकेंगे।

दुनिया में ऐसे बहुत से लोग हैं, जिन्हें सच्चे साथी की जरूरत होती है।